इकाई 3

प्रश्न 1 : मानवतावादी मनोविज्ञान का विकास के क्षेत्र में योगदान का वर्णन कीजिए।

उत्तर - मानवतावादी मनोविज्ञान एक मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण है बीसवीं शताब्दी के मध्य में प्रसिद्ध हुआ यह सिद्धांत सिगमंड फ्रायड के मनोविश्लेषण सिद्धांत तथा बी एफ स्किनर के व्यवहारवादी के जवाब में सामने आया।

परिचय:-

व्यक्तित्व के अध्ययन के लिए मनोवैज्ञानिकों ने कई सिद्धांतों को प्रतिपादित किया है। बीसवीं शताब्दी में व्यक्तित्व अध्ययन संबंधी विचार तीन महत्वपूर्ण सिद्धांतों के रूप में सामने आए।

पहला फ्रायड का मनोविश्लेषणात्मक सिद्धांत है। इस सिद्धांत से मूल प्रवृत्तियों एवं द्वंद्व के आधार पर मानव प्रकृति की व्याख्या की जाती है। दूसरा व्यवहारवाद का सिद्धांत है जिसमें व्यक्ति के व्यवहार की व्याख्या बाह्य उद्दिपकों के संबंध में की जाती है। तीसरा सिद्धांत मानवतावाद का सिद्धांत है। इस सिद्धांत को मनोविज्ञान जगत में "व्यक्तित्व सिद्धांतों की तीसरी शक्ति" भी कहा जाता है।

मानवतावादी सिद्धांत की व्याख्या अन्य सिद्धांतों से बिल्कुल ही भिन्न प्रकार से की गई है। इस सिद्धांत में विशेष रूप से यह माना जाता है कि व्यक्ति मूल रूप में अच्छा एवं आदरणीय होता है और यदि उसकी परीवेशीय दशाएं अनुकूल हों तो वह अपने शीलगुणों का सकारात्मक विकास करता है। यह सिद्धांत व्यक्तिक विकास, स्व का परिमार्जन,अभिवृद्धि,व्यक्ति के मूल्यों एवं अर्थों की व्याख्या करता है। इस सिद्धांत के प्रतिपादक अब्राहम मास्लो थे।

मासलो का जन्म रूढ़ीवादी जैविस परिवार में न्यूयार्क में हुआ। उन्होंने कोलंबिया विश्वविद्यालय से सन 1934 में मनोविज्ञान विद्या में पीएचडी की उपाधि प्राप्त की। 'मानवतावादी मनोविज्ञान' नामक इस सिद्धांत के विकास में अस्तित्ववादी मनोविज्ञान का भी योगदान है। अस्तित्ववाद एवं मानवतावाद दोनों व्यक्ति के मानवीय चेतना, आत्मगत अनुभूतियां एवं उमंग तथा व्यक्तिगत अनुभवों की व्याख्या करते है और उसे विश्व से जोड़ने का प्रयत्न करते हैं। मास्लो के इस सिद्धांत में यह धारणा है कि अभीप्रेरणाएं समग्र रूप से मनुष्य को प्रभावित करती है। इसी धारणा के आधार पर मास्लो ने प्रेरणा के पदानुक्रम सिद्धांत को प्रतिपादित किया।

मानवतावादी सिद्धांत के मनोवैज्ञानिकों ने मानव व्यवहार एवं पशु व्यवहार में सापेक्ष अंतर माना है। यह व्यवहारवाद का इसलिए खंडन करते हैं कि व्यवहारवाद का प्रारंभ ही पशु व्यवहार से होता है। मास्लो एवं उनके साथियों ने मानव व्यवहार को सभी प्रकार के पशु व्यवहारों से भिन्न माना। इसलिए उन्होंने पशु व्यवहार की मानव व्यवहार के साथ की समानता को अस्वीकार किया। उन्होंने मानव व्यवहार को समझने के लिए पशुओं पर किए जाने वाले शोध कार्यों का खंडन किया क्योंकि पशुओं में मनवोचित गुण जैसे आदर्श, मूल्य, प्रेम, लज्जा, कला, उत्साह, रोना, हंसना,ईर्ष्या, सम्मान तथा समानता नहीं पाए जाते। इन गुणों का विकास पशुओं में नहीं होता और विशेष मस्तिष्कीय कार्य जैसे कविता, गीत, कला, गणित आदि कार्य नहीं कर सकते। मानवतावादियो ने मानवीय व्यवहार की व्याख्या में मानव के अंतरंग स्वरूप पर विशेष बल दिया। उनके अनुसार व्यक्ति का एक अंतरंग रुप है जो कुछ मात्रा में उसके लिए स्वभाविक, स्थाई तथा अपरिवर्तनयिल है। इसके अतिरिक्त उन्होंने मानव की सृजनात्मक क्रियाओं को व्यिष्ट क्रियाएं माना है। मास्लो तथा अन्य मानवतावादियों का यह विचार है कि अन्य सिद्धांतों में मनोवैज्ञानिकों द्वारा मनुष्य के व्यवहार का अध्ययन करने में किसी ऐसी पक्ष का वर्णन नहीं किया, जो पूर्ण स्वस्थ मानव के प्रकर्या, जीवन पद्धति और लक्ष्यों का वर्णन कर सके। मास्लो का यह विश्वास था कि मानसिक स्वास्थ्य का अध्ययन किए बिना व्यक्ति की मानसिक दुर्बलता का अध्ययन करना

बेकार है। मास्लो (1970) ने कहा कि केवल असामान्य, अविकसितओं◌ं, विकलांगों तथा अस्वस्थओं◌ं का अध्ययन करना केवल 'विकलांग' मनोविज्ञान को जन्म देना है। उन्होंने मनोवैज्ञानिक रूप से स्वस्थ एवं स्व- वास्तवीकृत व्यक्तियों के अध्ययन पर अधिक बल दिया। अतः मानवतावादी मनोविज्ञान में 'आत्मपरिपूर्ण' (self fulfillment) को मानव जीवन का मूल्य माना है।

<u>विकासवादी मनोविज्ञान परिचय :-</u>

चार्ल्स डार्विन विकासवादी मनोविज्ञान यह ध्यान में रखता है कि कैसे हमारे पीतर से मिली आनुवंशिक विरासत हमारे व्यवहार को प्रभावित करती है। यह विकासवादी पहुंच यह बताती है कि हमारी कोशिका में जो रासायनिक संकेतिकरण होती है, वह निर्धारित करती है कि हमारे बाल का रंग क्या होगा और हमारी नस्ल कैसी होगी। यह ही नहीं, यह विकासवादी पहुंच हमें समझाती है किस व्यवहार ने हमारे पितर को जीवित रखा और प्रजनन करने में सहायता की। विकासवादी मनोविज्ञान चार्ल्स डार्विन की 1759 की किताब 'ऑन द ओरिजिन ऑफ स्पीशीस' पहली बार देखा गया था। चार्ल्स डार्विन का कहना है कि प्राकृतिक चुनाव की प्रक्रिया से हम देख सकते हैं कि जो सबसे योग्य है वही जीवित रह सकता है। उनका यह भी कहना है कि हमारे लक्षण के विकास ने हमारी जाति को हमारे वातावरण के साथ अनुकूलन करने में सहायता की है। विकासवादी मनोवैज्ञानिकों ने चार्ल्स डार्विन के विचारों पर चर्चा की है। उनका कहना है कि हमारे अनुवांशिक विरासत हमारे भौतिक लक्षण, जैसे हमारे बालों और आंखों का रंग, के साथ हमारे व्यक्तित्व के लक्षण और हमारे सामाजिक व्यवहार के बारे में भी बताता है। उदाहरण, विकासवादी मनोवैज्ञानिकों का कहना है कि कुछ व्यवहार जैसे शर्म, ईर्ष्या और अपार सांस्कृतिक समानता जो संभावित साथियों में वांछित की जाती है, वे कई हद तक आनुवंशिक विज्ञान का निर्धारित की जाती है। उसका मानना है कि यह इसलिए होता है क्योंकि इस व्यवहार ने मानव के जीवित रहने की गति को बढ़ाया है।

विकासवादी मनोवैज्ञानिकों का कहना है कि विकासवादी मनोविज्ञान केवल मनोविज्ञान का एक उप-अनुशासन नहीं है। उनका कहना है कि विकासवादी मनोविज्ञान हमें एक मूलभूत, सैद्धांतिक ढांचा तय करता है जिससे सारे मनोविज्ञान का क्षेत्र एकीकृत हो सकता है। विकासवादी मनोविज्ञान के सिद्धांत और निष्कर्ष के कई क्षेत्रों में प्रयोग हैं। कुछ क्षेत्र है - अर्थशास्त्र, पर्यावरण, स्वास्थ्य, कानून, प्रबंधन, मनोरोग विज्ञान, राजनीति और साहित्य।

<u>परिभाषा:-</u>

भौतिक और सामाजिक वातावरण के परिवर्तन, विशेष रूप से मस्तिष्क संरचना या संज्ञानात्मक तंत्र का परिवर्तन और व्यक्तियों के बीच व्यवहार मतभेद पर मानव के मनोवैज्ञानिक रूपांतरओं के अध्ययन को विकासवादी मनोविज्ञान कहते हैं

प्रश्न 2: <u>अधिगम से आप क्या समझते हैं? अधिगम अक्षमता अर्थ, विशेषता एवं वर्गीकरण को स्पष्ट करें।</u>

उत्तर- परिचय:-

आज शिक्षा के सार्वभौमिककरण के प्रयास के तहत विशिष्ट शिक्षा के संप्रत्यय को बल मिला है लेकिन लोगों में अभी भी जागरूकता का अभाव है। विशिष्ट बालक कौन है और विशेषता के कितने प्रकार हैं, इस संदर्भ में या तो लोगों को जानकारी ही नहीं है या फिर अपूर्ण जानकारी है। विशिष्ट बालक के मुख्य प्रकार जैसे अस्थि विकलांगता, श्रवण विकलांगता, दृष्टि विकलांगता आदि में तो फिर भी लोग अंतर कर लेते हैं लेकिन मानसिक मंदता, अधिगम अक्षमता

पागलपन आदि की जानकारी उन्हें नहीं है। भ्रमवश वे इन सबको एक ही अर्थ में समझते हैं तथा एक ही अर्थ में प्रयोग करते हैं। यह बहुत गंभीर समस्या है। अधिगम अक्षमता के साथ ऐसा अधिकांशतः होता है।

हर प्रकार के विशिष्टता की अपनी प्रकृति होती है और उस प्रकृति के अनुकूल ही हमें शिक्षण अधिगम - प्रक्रिया अपनानी पड़ती है। अतः यह आवश्यक है कि हम विशिष्ट बालकों के विभिन्न प्रकार को जाने एवं समझें।

<u>अधिगम अक्षमता अर्थ और परिभाषा:-</u>

अधिगम अक्षमता पर दो अलग-अलग पदों अधिगम अक्षमता से मिलकर बना है। अधिगम शब्द का आशय सीखने से है तथा अक्षमता का तात्पर्य क्षमता के अभाव या क्षमता की अनुपस्थिति से है। अर्थात सामान्य भाषा में अधिगम अक्षमता का तात्पर्य सीखने क्षमता अथवा योग्यता की कमी या अनुपस्थिति से है। सीखने में कठिनाइयों को समझने के लिए हमें एक बच्चे की सीखने की क्रिया को प्रभावित करने वाले कारकों का आकलन करना चाहिए। प्रभावी अधिगम के लिए मजबूत अभिप्रेरणा, सकारात्मक आत्म छवि, और उचित अध्ययन प्रथाएं एवं राजनीतियां आवश्यक शर्ते हैं (एरो, जेरे-फोलोटिया, हेंगारी, कारिउकी तथा मकानडावार, 2011) औपचारिक शब्दों में अधिगम अक्षमता को विद्यालयी पाठ्यक्रम सीखने की क्षमता की कमी या अनुपस्थिति के रूप में परिभाषित किया जा सकता है।

अधिगम अक्षमता पद का सर्वप्रथम प्रयोग 1963 ई. में सैमुअल किर्क द्वारा किया गया था और इसे निम्न शब्दों में परिभाषित किया था।

अधिगम अक्षमता को वाक्, भाषा, पठन, लेखन अंकगणितीय प्रक्रियाओं में से किसी एक या अधिक प्रक्रियाओं में मंदता, विकृति अथवा अवरुद्ध विकास के रूप में परिभाषित किया जा सकता है और संभवतः मस्तिष्क कार्यविरूपता और संवेगात्मक अथवा व्यवहारिक विक्षोभ का परिणाम है न कि मानसिक मंदता, संवेदी अक्षमता अथवा संस्कृतिक अनुदेशन कारक का। (किर्क,1963)

इसके पश्चात् से अधिगम अक्षमता को परिभाषित करने के लिए विद्वानों द्वारा निरंतर प्रयास किए गए लेकिन कोई सर्वमान्य परिभाषा विकसित नहीं हो पाई।

अमेरिका में विकसित फेडरल परिभाषा के अनुसार, विशिष्ट अधिगम अक्षमता को, लिखित एवं मौखिक भाषा के प्रयोग एवं समझने में शामिल एक या अधिक मूल मनोवैज्ञानिक प्रक्रिया में विकृति, जो व्यक्ति के सोच, वाक्, पठन, लेखन, एवं अंकगणितीय गणना को पूर्ण या आंशिक रूप में प्रभावित करता है, के रूप में परिभाषित किया जा सकता है। इसके अंतर्गत इंद्रियजनित विकलांगता, मस्तिष्क क्षति, अल्पतम असामान्य दिमागी, प्रक्रिया, डिसलेक्सिया एवं विकासात्मक वाङ्घाघाट आदि शामिल है। इसके अंतर्गत वैसे बालक नहीं सम्मिलित किए जाते हैं, जो दृष्टि, श्रवण यान गामक विकलांगता, संवेगात्मक विक्षोभ, मानसिक मंदता, संस्कृतिक या आर्थिक दोष के परिणामतः अधिगम संबंधी समस्या से पीड़ित है। (फेडरल रजिस्टर, 1977)

वर्ष 1994 में अमेरिका की अधिगम अक्षमता की राष्ट्रीय संयुक्त समिति (द नेशनल ज्वाइंट कमिटी ऑन लर्निंग डिसेबिलिटीज़्म) ने अधिगम अक्षमता को परिभाषित करते हुए कहा कि अधिगम अक्षमता एक सामान्य पद है, जो मानव में अनुमानतः केंद्रीय तांत्रिक तंत्र के सुचारू रूप से नहीं कार्य करने के कारण उत्पन्न आंतरिक विकृतियों के विषम समूह, जिसमें कि बोलने, सुनने, पढ़ने, लिखने, तर्क करने या गणितीय क्षमता के प्रयोग में कठिनाई शामिल होते हैं, को दर्शाता

है। जीवन के किसी भी पड़ाव पर यह उत्पन्न हो सकता है। हालांकि अधिकतम अक्षमता अन्य प्रकार की अक्षमताओं (जैसे कि संवेदी अक्षमता, मानसिक मंदता, गंभीर संवेगात्मक विक्षोभ) या सांस्कृतिक भिन्नता, अनुपयुक्तता या अपर्याप्त अनुदेशन के प्रभाव के कारण होता है लेकिन यह दशाएं अधिगम अक्षमता को प्रत्यक्षतः प्रभावित नहीं करती है। (डी नेशनल ज्वाइंट कमिटी ऑन लर्निंग डिसेबिलिटीज़म - 1994)।

<u>अधिगम अक्षमता की प्रकृति एवं विशेषताएं :-</u>

अधिगम संबंधी कठिनाई, श्रवण, दृष्टि, स्वास्थ्य, वाक् एवं संवेग आदि से संबंधित अस्थाई समस्याओं से जुड़ी होती है। समस्या का समाधान होते ही अधिगम संबंधी वह कठिनाई समाप्त हो जाती है। इसके विपरीत अधिगम अक्षमता उस स्थिति को कहते हैं जहां व्यक्ति की योग्यता एवं उपलब्धि में एक स्पष्ट अंतर हो। यह अंतर संभवतः स्नायूजनित यू होता है तथा यह व्यक्ति विशेष में आजीवन उपस्थित रहता है।

चूंकि अधिगम अक्षमता को कानूनी मान्यता प्राप्त नहीं है और जनगणना में अधिगम अक्षमता को आधार नहीं बनाया जाता है। इसलिए देश में मौजूद अधिगम अक्षम बालकों के संबंध में ठीक-ठीक आंकड़ा प्रदान करना तो अति मुश्किल है लेकिन एक अनुमान के अनुसार यह कहा जा सकता है कि देश में इस प्रकार के बालकों की संख्या अन्य प्रकार के विकलांगता बालकों की संख्या से कहीं ज्यादा है। यह संख्या, देश में उपलब्ध कुल स्कूली जनसंख्या के 1-42 प्रतिशत तक हो सकता है। वर्ष 2012 में चेन्नई में समावेशी शिक्षा एवं व्यवसाईक विकल्प विषय पर संपन्न हुए एक अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन 2012 में विशेषज्ञों ने कहा कि भारत में लगभग 10% बालक अधिगम अक्षम हैं। (टाइम्स ऑफ इंडिया, जनवरी 27,2012)

अधिगम अक्षमता की विभिन्न मान्यताओं पर दृष्टिपात करने से अधिगम अक्षमता की प्रकृति के संबंध में आपको निम्नलिखित बातें दृष्टिगोचर होगी-

1. अधिगम अक्षमता आंतरिक होती है।
2. यह स्थाई स्वरूप का होता है अर्थात यह व्यक्ति विशेष में आजीवन विद्यमान रहता है।
3. यह कोई एक विकृति नहीं बल्कि विकृतियों का एक विषम समूह है।
4. इस समस्या से ग्रसित व्यक्तियों में कई प्रकार के व्यवहार और विशेषताएं पाई जाती है।
5. चूंकि यह समस्या केंद्रीय तंत्रिका तंत्र की कार्यविरूपता से संबंधित है, अतः यह एक जैविक समस्या है।
6. यह अन्य प्रकार की विकृतियों के साथ हो सकता है, जैसे- अधिगम अक्षमता और संवेगात्मक विक्षोभ।
7. यह श्रवण, सोच, वाक्, पठन, लेखन एवं अंकगणिततीय गणना में शामिल मनोवैज्ञानिक प्रक्रिया में विकृति के फलस्वरूप उत्पन्न होता है, अतः यह एक मनोवैज्ञानिक समस्या भी है।

<u>अधिगम अक्षमता का वर्गीकरण:-</u>

अधिगम अक्षमता एक वृहद प्रकार के कई आधारों पर विभेधिकृत किया गया है। ये सारे विभेदीकरण अपने उद्देश्यों के अनुकूल हैं। इसका प्रमुख विभेदीकरण ब्रिटिश कोलंबिया (201) एवं ब्रिटेन के शिक्षा मंत्रालय द्वारा प्रकाशित पुस्तक सपोर्टिंग स्टूडेंट्स विद लर्निंग डिसेबिलिटी ए गाइड फॉर टीचर्स में दिया गया है, जो निम्नलिखित है-

- डिसलेक्सिया (पड़ने संबंधी विकार)
- डिसग्राफिया (लेखन संबंधी विकार)

- डिस्केलकुलिया (गणितीय कौशल संबंधी विकार)
- डिस्फैसिया (वाक् क्षमता संबंधी विकार)
- डिस्प्रेक्सिया (लेखन एवं चित्रांकन संबंधी विकार)
- डिसऑर्थोग्राफीय (वर्तनी संबंधी विकार)
- ऑडिटरी प्रोसेसिंग डिसऑर्डर (श्रवण संबंधी विकार)
- सेंसरी इंटीग्रेशन और प्रोसेसिंग डिसऑर्डर (इंद्रिय समन्वयक क्षमता संबंधी विकार)
- विजुअल परसेप्शन डिसऑर्डर (दृश्य प्रत्येकक्षण क्षमता संबंधी विकार)
- ऑर्गेनाइजेशनल लर्निंग डिसऑर्डर (संगठनात्मक पठन संबंधी विकार)